पंचायत का न्याय

(कहानी)

2

बहुत समय पहले की बात है। एक छोटा-सा क़बीला था। उस क़बीले में दो भाई रहते थे। उनमें एक भाई काफ़ी अमीर था और दूसरा भाई बहुत ज़्यादा ग़रीब।

अमीर भाई के पास खेत-खलिहान, नौकर-चाकर, खेती के लिए पशु आदि सभी कुछ था। लेकिन गरीब भाई मेहनत-मज़दूरी करके अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। कभी-कभी तो उन्हें खाना भी नहीं मिलता था। लेकिन वह सिद्धांतों का पक्का था। उसने आज तक अपने बड़े भाई से कभी कुछ भी नहीं माँगा था। उसका सिद्धांत था कि मेहनत-मज़दूरी करके जो कुछ भी मिल जाए, उसी में वह गुज़ारा करे, किसी से कुछ भी नहीं माँगता था।

एक दिन की बात है, उसने सारा दिन मेहनत-मज़दूरी करने के बाद, शाम को घर आते समय हाट से चावल तथा सूखे मटर ख़रीद लिये। घर आने के बाद वह सारा सामान अपनी पत्नी को सौंपकर बोला—"ये मैं बाज़ार से सामान ले लाया हूँ, तुम जल्दी से खाना तैयार कर लो।"

उसके पास ही उसके दो बच्चे सो रहे थे। उन पर चादर डालकर पत्नी बोली—"ईंधन तो ख़त्म हो गया है, पास के जंगल से ज़रा लकड़ियाँ बटोर लाओ।" शाम हो चुकी थी। लकड़ियाँ लाते-लाते अँधेरा हो जाने की संभावना थी। इसके अलावा उसे ज़ोर से भूख लगी हुई थी। इसलिए वह अपने अमीर भाई के पास गया और उससे यह कहकर सवारी के लिए घोड़ा माँग लिया कि लकड़ियाँ बटोरकर लाते ही वह घोड़ा वापस कर देगा।

अमीर भाई बड़ा घमंडी था, वह अपने भाई पर ज़रा भी तरस नहीं खाता था। लेकिन फिर भी उसके माँगने पर अमीर भाई ने घोड़ा दे दिया।

ग़रीब भाई घोड़ा पाकर ख़ुश हो गया। वह घोड़े पर सवार होकर जंगल में पहुँचा। उसने इधर-उधर से काफ़ी लकड़ियाँ बटोर लीं और उनका गट्ठर बनाकर घोड़े की पीठ पर लाद दिया। फिर अपने घर की ओर चल दिया।

रास्ता बड़ा ख़राब था। चारों ओर कंटीली झाड़ियाँ थीं। चलते-चलते एकाएक घोड़े की पूँछ एक कँटीली झाड़ी में फँस गई। इससे घोड़े की पूँछ कट गई। ग़रीब भाई बहुत घबराया। जब वह अमीर भाई के घर पहुँचा तो घोड़े की कटी पूँछ देखकर अमीर भाई ग़ुस्से से पागल हो गया।

उसने ग़रीब भाई को ख़ूब खरी-खोटी सुनाईं। वह बेचारा लकड़ियाँ लेकर अपने घर पहुँचा। भाई की गाली-गलौज और कड़वी बातों को याद कर उसका मन बहुत दु:खी हो रहा था। उसकी मनोदशा से अनभिज्ञ पत्नी ने जल्दी-जल्दी खाना तैयार कर दिया और उसके सामने रख दिया।

मगर वह बिना खाए ही लेट गया। अब उसकी भूख न जाने कहाँ ग़ायब हो गई थी। अनजानी

आशंका से उसका मन काँप रहा था। दूसरे दिन वही हुआ जिसका उसे डर था। अमीर भाई ने क़बीले के सरदार से उसकी शिकायत कर दी। शिकायत सुनकर सरदार ने पंचायत करने का फ़ैसला किया।

पंचायत का दिन भी आ पहुँचा। दोनों भाई सरदार के घर की तरफ़ चल पड़े। ग़रीब भाई दु:ख तथा शर्म के मारे सिर झुकाए चल रहा था। अमीर का सिर घमंड से ऐंठा हुआ था। उसे पूरा विश्वास था कि सरदार उसके भाई को दंड देगा।

रास्ते में एक नदी बहती थी। उसके ऊपर लकड़ी का कच्चा पुल बना हुआ था। जिस समय वह दोनों भाई उस पुल के ऊपर से गुज़र रहे थे, उस समय नदी के रास्ते से एक आदमी अपने बूढ़े और बीमार बाप को नाव में बैठाकर किसी डॉक्टर के पास ले जा रहा था।

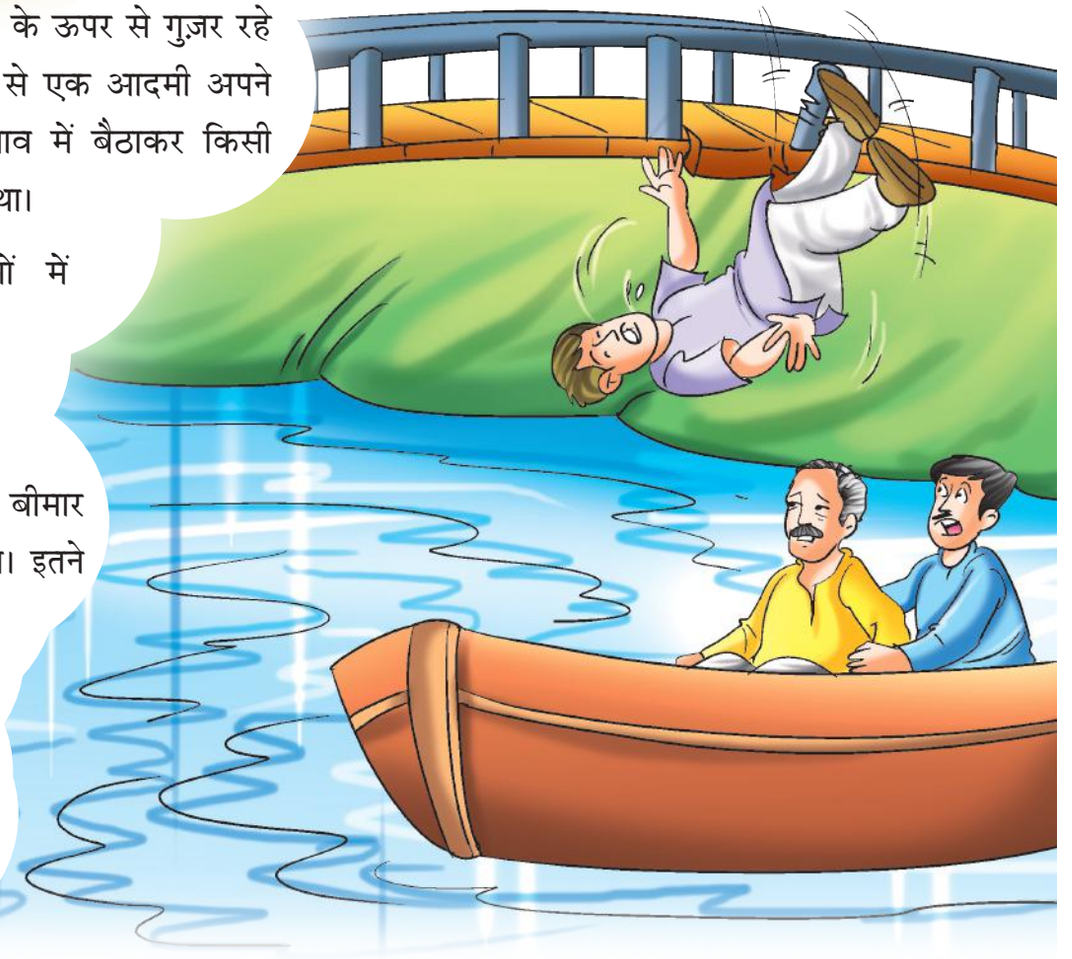

ग़रीब भाई अपनी चिंताओं में खोया हुआ था। अनजाने में उसका पैर पुल के एक टूटे हुए तख़्ते पर पड़ गया, और वह धड़ाम से बीमार आदमी के ऊपर आकर गिरा। इतने भारी आदमी का बोझ बीमार व्यक्ति सह नहीं सका और वह मर गया।

बीमार आदमी के बेटे ने ग़रीब भाई को पकड़

लिया। जब उसे पता चला कि किसी झगड़े के कारण वह अपने अमीर भाई के साथ सरदार की पंचायत में जा रहा है तो वह लड़का भी उसके साथ चल दिया।

ग़रीब भाई पर पंचायत में दो-दो मुक़दमे ठोंक दिए गए। सरदार ने दिलचस्पी से उनकी बात सुनी। ग़रीब भाई एक तरफ़ सिमटा हुआ खड़ा था। यह देखकर सरदार समझ गया कि यह बेचारा मुसीबत का मारा है। उसने उस ग़रीब को बचाने का फ़ैसला कर लिया।

सबकी बात सुनने के बाद सरदार सोच में पड़ गया और कुछ क्षणों बाद उसने फ़ैसला सुनाया—"ग़रीब भाई का क़सूर साबित हो चुका है, इसलिए इसे सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए। सबसे पहले उसने अमीर भाई के घोड़े की दुम काट दी। बिना दुम का घोड़ा लौटाना बहुत बड़ा अन्याय है। घोड़ा तब तक ग़रीब भाई के पास रहेगा जब तक उसकी नई दुम नहीं उग आती। नई दुम उग आने के बाद वह घोड़ा अमीर भाई को लौटा दे।"

थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद सरदार ने उस लड़के की ओर देखकर दूसरा फ़ैसला सुनाया—"ग़रीब भाई ने नाव में जाते एक बूढ़े और कमज़ोर आदमी को बे-मौत मार डाला, यह बड़ा गंभीर मामला है। ग़रीब भाई को आज्ञा दी जाती है कि अब वह भी नाव से उसी रास्ते से गुज़रे और बूढ़े का बेटा पुल से कूदकर उस पर गिरे।"

सरदार का फ़ैसला सुनने के बाद दोनों बग़लें झाँकने लगे। अपने आप में फ़ैसला तो सही था लेकिन इसका पालन करना आसान काम नहीं था। अमीर आदमी ने निवेदन किया—"सरदार, मैं बिना पूँछ वाला घोड़ा लेने के लिए तैयार हूँ।"

बूढ़े का बेटा भी कहने लगा—"सरदार! मुझे पुल से कूदने से बहुत डर लगता है। अब जो होना था सो हो गया, मैं ग़रीब भाई को इतनी कड़ी सज़ा नहीं दिला सकता।"

सरदार ने दोनों को डाँटा—"अगर तुम लोग पंचायत का निर्णय नहीं मानोगे तो तुम लोगों को सौ-सौ सोने की मोहरें जुर्माने के तौर पर देनी पड़ेंगी।"

दोनों जुर्माना देने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने सौ-सौ मोहरें सरदार को सौंपीं और घर लौट गए। सरदार ने वे मोहरें उस ग़रीब भाई को दीं। उसने उन मोहरों से अपना कारोबार शुरू कर दिया। उसका कारोबार कुछ दिनों में अच्छा चलने लगा और वह सुख से दिन गुज़ारने लगा।

सरदार के इस अनोखे फ़ैसले ने ग़रीब भाई की क़िस्मत ही बदल दी थी।

शब्द-अर्थ

सिद्धांत — नियम *(rules)*,
खरी-खोटी — भला-बुरा *(revile)*,
आशंका — संदेह *(doubt)*,
ख़ामोश — शांत *(quite)*,
बटोर लाओ — इकट्ठा कर लाओ *(collecion)*,
अनभिज्ञ — अनजान *(strange)*,
दुम — पूँछ *(tail)*,
बग़लें झाँकना — निरुत्तर हो जाना *(no answer)*।

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

खलिहान	कँटीली	आशंका	पंचायत	घमंड
गंभीर	निर्णय	कारोबार	क़िस्मत	क़ुसूर

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) दोनों भाइयों की स्थिति कैसी थी?

(ख) ग़रीब भाई ने अमीर भाई से क्या माँगा?

(ग) सरदार ने कितनी मोहरों का जुर्माना किया?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) अमीर भाई था–

☐ दयालु ☐ मूर्ख ☐ घमंडी

☐ क्रूर

(ख) घोड़े की कट गई–

☐ नाक ☐ पूँछ ☐ जीभ

☐ सभी

(ग) पुत्र पिता को ले जा रहा था–

☐ घर ☐ कचहरी ☐ डॉक्टर के यहाँ

☐ मंदिर

2. किसने कहा, किससे कहा–

	किसने कहा		किससे कहा	
(क) "इसे सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए।"	.....	ने	.....	से
(ख) "मैं बिना पूँछ वाला घोड़ा लेने को तैयार हूँ।"	.....	ने	.....	से
(ग) "मुझे पुल से कूदने में बहुत डर लगता है।"	.....	ने	.....	से

3. पाठांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखो–

रास्ते में एक नदी बहती थी। उसके ऊपर लकड़ी का कच्चा पुल बना हुआ था। जिस समय वह दोनों भाई उस पुल के ऊपर से गुज़र रहे थे, उस समय नदी के रास्ते से एक आदमी अपने बूढ़े और बीमार बाप को नाव में बैठाकर किसी डॉक्टर के पास ले जा रहा था।

(क) पुल कैसा था?

(ख) पुल से कौन गुज़रा?

(ग) नदी के रास्ते नाव में बैठकर कौन किसे ले जा रहा था?

4. अधिकतम शब्दों में–

(क) ग़रीब का क्या सिद्धांत था?

(ख) घोड़े की पूँछ कैसे कटी?

(ग) पुल पर क्या घटना घटी?

(घ) सरदार ने किसके पक्ष में और क्या फ़ैसला सुनाया?

भाषा-ज्ञान

1. अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ)

(क) ङ, ञ, ण, न, म का हलंत रूप आधा या अ रहित ही अनुस्वार (ं) रूप में आता है। जैसे– गङ्गा – गंगा, फन्दा – फंदा, डण्डा – डंडा।

इन पाँचों को इनके मूल उच्चारण के साथ नासिका से भी बोला जाता है। यह अपने उच्चारण से पहले वर्ण पर अनुस्वार (ं) अर्थात् बिंदु रूप में आता है। जैसे–कङ्घा – कंघा, मञ्जन – मंजन, घण्टा – घंटा, अन्धा – अंधा, खम्भा – खंभा आदि।

(ख) जब किसी वर्ण का उच्चारण करते समय यह हवा मुख और नाक, दोनों से निकले तो वर्ण के ऊपर (ँ) अर्थात् अनुनासिक का प्रयोग किया जाता है, जैसे–हँस, चाँद, खाएँ, ऊँचा आदि।

ध्यान दें–शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं जैसे–ि, ी, े, ै, ो, ौ में चंद्रबिंदु का परिवर्तन बिंदु में हो जाता है, जैसे–सिंचाई, सेंकना, भौंकना आदि।

- उचित स्थान पर ं या ँ लगाओ–

पचायत	.....	उन्होने	.....
गभीर	.....	नही	.....
पहुचा	.....	पड़ेगी	.....
पूछ	.....	उसमे	.....

2. ध्यानपूर्वक पढ़ो–

वह किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता था।

बात सुनने के बाद सरदार सोच में पड़ गया।

इन वाक्यों में 'के सामने' और 'के बाद' शब्द उनके साथ प्रयुक्त शब्द 'किसी' और 'हाथ', 'बात' और 'सरदार' के संबंध को बताते हैं, अतः ये संबंधबोधक अव्यय हैं।

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगकर वाक्य के संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से संबंध स्पष्ट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

- उचित संबंधबोधक अव्यय छाँटकर रिक्त स्थान भरो–

के द्वारा, के समान, के अंदर, से पहले, के विरुद्ध

(क) कश्मीर स्वर्ग ..... है।

(ख) उसे पत्र ..... सूचित करो।

(ग) मित्र ..... मत जाओ।

(घ) कमरे ..... कोई है।

(ङ) नहाने ..... मंजन करो।

क्रियात्मक गतिविधि

- भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य के विषय में पढ़ो और कोई रोचक कहानी या क्रिस्सा कक्षा में सुनाओ। (नेट पर विक्रमादित्य से संबंधित साहित्य उपलब्ध है।)
- भारतीय न्याय-प्रणाली के विषय में आरंभिक जानकारी एकत्र करके एक निबंध तैयार करो।
- (अध्यापक व घर के बड़ों की मदद ली जा सकती है।)
- आप अपनी समस्या का समाधान किससे करवाते हैं?